Part–8

CHAPTER - 1

1. (क) भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने भावों तथा विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।

इसके तीन भेद होते हैं—

(i) मौखिक (ii) लिखित (iii) सांकेतिक भाषा।

(ख) भाषा और बोली में अंतर—

(i) भाषा एक विस्तृत क्षेत्र में बोली जाती है, जबकि बोली का क्षेत्र छोटा होता है।

(ii) भाषा का रूप मानक होता है, लेकिन बोली का नहीं।

(iii) भाषा का लिखित रूप भी होता है, जबकि बोली सामान्यतः मौखिक होती है।

(iv) भाषा का अपना साहित्य होता है, बोली प्रायः लोक साहित्य में मिलती है।

(ग) व्याकरण से भाषा को शुद्ध रूप में बोलना और लिखना सीखते हैं।

2. (क) मौखिक, लिखित और सांकेतिक भाषा।

(ख) 22 (ग) 1652 (घ) देवनागरी (ङ) बोलियाँ (च) लिखना

3. (क) × (ख) √ (ग) × (घ) √ (ङ) √

4. (क) गुरुमुखी (ख) शारदा (ग) फारसी (घ) रोमन (ङ) देवनागरी

5. (क) 1 (ख) 3 (ग) 2 (घ) 2 (ङ) 3

6. (i) असम (ii) उत्तर प्रदेश/जम्मू-कश्मीर (iii) उड़िया/ओडिसा

(iv) जम्मू (v) आंध्र प्रदेश (vi) आसाम, मेघालय (vii) पश्चिम बंगाल

(viii) महाराष्ट्र (ix) बिहार (x) ओड़िसा (xi) करनाटक, म. प्र., राजस्थान

(xii) केरल (xiii) पंजाब (xiv) गुजरात, महाराष्ट्र (xv) गुजरात

(xvi) जम्मू-कश्मीर (xvii) सिक्किम (xviii) करनाटक

(xix) गोवा (xx) मणिपुर (xxi) दिल्ली, उ. प्र., बिहार (xxii) तमिलनाडु

CHAPTER - 2

1. (क) वर्ण भाषा की लघुतम इकाई है, जिसके और टुकड़े नहीं हो सकते।

वर्ण के दो भेद होते हैं—(i) स्वर, (ii) व्यंजन।

(ख) स्वतंत्र रूप से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ जिनको बोलते समय किसी अन्य ध्वनि का सहयोग नहीं लेना पड़ता।

इसके तीन भेद होते हैं—(i) ह्रस्व स्वर, (ii) दीर्घ स्वर, (iii) प्लुत स्वर।

(ग) जिन ध्वनियों को बोलते समय स्वरों की आवश्यकता रहती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं।

(घ) अल्पप्राण के उच्चारण में कम मात्रा में वायु मुख से निकलती है, जबकि महाप्राण में अधिक मात्रा में वायु मुख से निकलती है।

2. (क) वर्णमाला (ख) 33 (ग) 4 (घ) 7

3. (क) √ (ख) √ (ग) √ (घ) × (ङ) √

4. (क) 2 (ख) 2 (ग) 2 (घ) 2 (ङ) 1

5. (क) अलौकिक (ख) अत्यधिक (ग) कवयित्री (घ) बीमार (ङ) श्रीमती
(च) आशीर्वाद (छ) इंदु

6. (क) श् + इ + क्ष् + इ + क् + आ

(ख) उ + च् + च् + आ + र् + ण

(ग) स् + अ + ज् + ज् + अ + न् + अ + त् + आ

(घ) स् + व् + आ + म् + इ + न् + ई

(ङ) आ + श् + ई + व् + आ + द् + अ

(च) अ + द् + व् + इ + त् + ई + य् + अ

CHAPTER - 3

1. (क) दो ध्वनियों के परस्पर मेल से होने वाले विकार अथवा परिवर्तन को संधि कहते हैं। इसके तीन भेद होते हैं—
(i) स्वर संधि, (ii) व्यंजन संधि, (iii) विसर्ग संधि।

(ख) दो स्वरों के मिलने से होने वाला विकार या बदलाव स्वर संधि कहलाता है। इसके पाँच भेद होते हैं—
(i) दीर्घ संधि (ii) गुण संधि (iii) वृद्धि संधि
(iv) यण सधि (v) अयादि संधि।

(ग) विसर्ग के बाद किसी स्वर या व्यंजन के आने पर विसर्ग में जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं। संधि के बाद विसर्ग (:) लोप हो जाता है।

2. (क) तीन (ख) व्यंजन संधि (ग) पाँच (घ) स्वर संधि

3. **गलत शब्द**—भानुदय, नीरज, दुस्साहस, सूक्ति, वीरोचित

4. (i) यदि + अपि (ii) सत् + जन (iii) मनः + हर
(iv) निः + चल (v) निः + ठुर (vi) निः + भय
(vii) रेखा + अंकित (viii) उत् + चारण (ix) प्रति + एक
(x) जगत् + ईश (xi) राम + आयण (xii) विद्या + आलय
(xiii) धर्म + आत्मा (xiv) तत् + लीन (xv) मनः + रंजन

5. (क) 2 (ख) 2 (ग) 3 (घ) 1 (ङ) 2

6.

भोजन	सप्तर्षि	सज्जन	स्वल्प
अभिसेक	अत्याचार	अधोगति	नरोत्तम
संहार	शुभेच्छा	व्यापक	उल्लेख
दुश्चक्र	एकैक	मनोताप	उच्चारण
रजोगुण	तम्मय	निष्कपट	शरच्चंद्र

CHAPTER - 4

1. (क) वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।
हिंदी व्याकरण में शब्दों का वर्गीकरण पाँच आधार पर होता है।

(ख) यौगिक दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बनते हैं और ये शब्दों से संबंधित अर्थ देते हैं, जबकि योगरूढ़ मिले हुए शब्दों से भिन्न कोई तीसरा अर्थ देते हैं।

(ग) जो शब्द अपना रूप वाक्य के समय लिंग, वचन, कारक, काल इत्यादि के कारण; बदल जाते हैं, वे विकारी शब्द कहलाते हैं और जो शब्द नहीं बदलते वे अविकारी शब्द कहलाते हैं।

2. (क) तत्सम (ख) एकार्थी (ग) भिन्नार्थक (घ) सर्वनाम, विशेषण

3. (क) 2 (ख) 1 (ग) 2 (घ) 2 (ङ) 2

4. (क) नेत्र, नयन, लोचन (ख) जलज, पंकज, नीरज
(ग) सदन, गृह, आवास

5. **देशज**—रोटी, लकड़ी, टाँग, लोहा।
तत्सम—गृह, कर्ण, सप्त, दीपक।
तद्भव—दूध, कान, सूखा, अस्थि।
विदेशी—रिक्शा, फुटबॉल, अलमारी, लीची।

6. **रस**—स्वाद, आनंद **पतंग**—सूर्य, पक्षी
दंड—लाठी, सजा **जलज**—जल में रहने वाला।

CHAPTER - 5

1. (क) वह शब्दांश जो शब्दों के आरंभ में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता ला देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं।

(ख) **अंतर**—उपसर्ग शब्द के आरंभ में जुड़ते हैं, जबकि प्रत्यय पीछे लगते हैं।
समानता—दोनों शब्द में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन लाते हैं।

2. (क) उपसर्ग (ख) पाँच (ग) संस्कृत (घ) अरबी-फारसी
(ङ) अंग्रेजी

3.

	उपसर्ग	मूल शब्द		उपसर्ग	मूल शब्द
1.	अति	रिक्त	10.	अप	शब्द
2.	अभि	षेक	11.	उप	ग्रह
3.	सम्	मुख	12.	प्रति	क्षण
4.	सु	शिक्षित	13.	अधिक	नायक
5.	स्व	अधीनता	14.	नि	अपराध
6.	प्र	गति	15.	अंतर	आत्मा
7.	परा	क्रम	16.	पर	उपकार
8.	परि	कल्पना	17.	दुस्	चरित्र
9.	अध	पका	18.	पुनर्	निर्माण

4.
1. पुनर्निर्माण, पुनर्जन्म
2. उनचास, उनसठ
3. निडर, निपुण
4. खुशखबरी, खुशनसीब
5. अवगुण, अवकाश
6. पराक्रम, पराधीन
7. दरकिनार, दरअसल
8. चीफ जस्टिस, चीफ मिनिस्टर
9. सहपाठी, सहभागी
10. कुपुत्र, कुमार्ग
11. वाइस कैप्टन, वाइस चांसलर
12. अतिक्रमण, अतिरिक्त
13. सम्मुख, संवाद
14. विचार, विमान
15. अनुभव, अनुराग
16. दुराचार, दुर्दशा

5. (क) 2 (ख) 2 (ग) 2 (घ) 2 (ङ) 2

6.

1.	कुमार्ग	10.	अंतर्राष्ट्रीय	19.	त्रिकोण
2.	पुरातत्व	11.	अभिशाप	20.	स्वीकार
3.	सम्मुख	12.	खूबसूरत	21.	सुरक्षित
4.	अवकाश	13.	विजय	22.	आजन्म
5.	संताप	14.	दुराचार	23.	दरअसल
6.	स्वराज्य	15.	अपयश	24.	उपग्रह
7.	विदेश	16.	विकर्म	25.	आगमन
8.	आजीवन	17.	हरदिन	26.	संहार
9.	अपशब्द	18.	खुशनसीब	27.	हेड मास्टर

CHAPTER - 6

1. (क) वह शब्दांश जो किसी शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन लाते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं।

(ख) जो प्रत्यय क्रिया धातु के रूप के बाद लगते हैं तथा संज्ञा, विशेषण आदि शब्द बनाते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहा जाता है। कृत प्रत्यय पाँच प्रकार के होते हैं—

(i) कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय (ii) कर्मवाचक कृत् प्रत्यय

(iii) करणवाचक कृत् प्रत्यय (iv) भावाचक कृत् प्रत्यय

(v) क्रियावाचक कृत् प्रत्यय

(ग) जो प्रत्यय धातु को छोड़कर अन्य संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम और अव्यय के बाद लगाए जाते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं।

जैसे—मास + इक = मासिक

तद्धित प्रत्यय छः प्रकार के होते हैं—

(i) कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय (ii) क्रमवाचक तद्धित प्रत्यय

(iii) भाववाचक तद्धित प्रत्यय (iv) संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय

(v) लघुतावाचक तद्धित प्रत्यय (vi) स्त्रीलिंगवाचक तद्धित प्रत्यय

(घ) उपसर्ग और प्रत्यय में अन्तर—

उपसर्ग	प्रत्यय
(i) शब्द के आरंभ में जुड़ते हैं।	शब्द के अंत में जुड़ते हैं।
(ii) पाँच भेद होते हैं।	दो भेद होते हैं।
(iii) इसके लगने से अर्थ में पूरी तरह परिवर्तन आता है।	इसके लगने से अर्थ में विशेष परिवर्तन नहीं होता।

2. (क) प्रत्यय (ख) कृत् प्रत्यय (ग) तद्धित प्रत्यय (घ) कर्तृवाचक

3. (क) √ (ख) × (ग) √ (घ) √ (ङ) ×

4.

	मूल शब्द	प्रत्यय		मूल शब्द	प्रत्यय
1.	बूढ़ा	आपा	11.	लिख	आवट
2.	गाड़ी	वाला	12.	अपना	पन
3.	गुड्डी	इया	13.	देवर	आनी
4.	मामा	एरा	14.	कला	कार
5.	धर्म	इक	15.	मुख	इया
6.	प्यास	आ	16.	श्री	मति
7.	ग्राम	ईन	17.	चित्र	कार
8.	पालन	हार	18.	दोस्त	ई
9.	घबरा	आहट	19.	चाँद	नी
10.	सफल	ता	20.	नानी	हाल

5. (क) 2 (ख) 3 (ग) 2 (घ) 2 (ङ) 2

6.

1. धार्मिक, साप्ताहिक
2. लड़ाका, उड़ाका
3. मिठास, खटास
4. चढ़ाव, पढ़ाव
5. दिखावट, लिखावट
6. शर्मीला, रंगीला
7. सब्जीवाला, गाड़ीवाला
8. स्वामीत्व, ममत्व
9. थकान, उड़ान
10. पागलपन, खालीपन
11. बिछौना, खिलौना
12. वीरता, चलता
13. लुहार, सुनार
14. गुजराती, नरमी
15. ममेरा, चचेरा
16. चुनौती, कटौती
17. पत्रकार, चित्रकार
18. घबराहट, चिकनाहट
19. पेटू, छोटू
20. पंडिताइन, गुरुआइन

CHAPTER - 7

1. (क) दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से शब्द बनाने की प्रक्रिया को समास कहते हैं।

इसके छः भेद होते हैं—

(i) अव्ययीभाव समास (ii) तत्पुरुष समास
(iii) द्वंद्व समास (iv) बहुव्रीहि समास
(v) कर्मधारय समास (vi) द्विगु समास

(ख) जिस समस्त पद का कोई भी पद प्रधान नहीं होता, बल्कि किसी अन्य पद का बोध हो, वे बहुव्रीहि समास कहलाते हैं।

(ग) **संधि और समास में अंतर**—

(i) दो ध्वनियों के परस्पर मेल से जो विकार अथवा परिवर्तन आता है, उसे संधि कहते हैं, जबकि समास दो या दो अधिक शब्दों के मेल से बना नया शब्द है।

(ii) संधि के तीन भेद होते हैं और समास के छः भेद होते हैं।

2. (क) अव्ययीभाव (ख) छः (ग) द्विगु समास (घ) द्वंद्व (ङ) कर्मधारय

3. (क) रोग से मुक्त (ख) गृह में प्रवेश (ग) प्रसंग के अनुसार
(घ) आशा अतीत (ङ) देव का आलय (च) नीला है कमल जो
(छ) युद्ध से स्थिर (ज) पाठ के लिए शाला (झ) गौ के लिए शाला
(ञ) धर्म से भ्रष्ट

4. (क) कमलनयन (ख) राजा-प्रजा (ग) नीलकंठ
(घ) गृह प्रवेश (ङ) गुरुदेव (च) सत्याग्रह

(छ) परमानंद (ज) नवग्रह (झ) आजन्म
(ञ) प्रेमातुर (ट) गौशाला (ठ) सप्तद्वीप
(ड) गुण-दोष (ढ) बारहसींग

5. (क) 2 (ख) 2 (ग) 2 (घ) 2 (ङ) 2

6. **अव्ययीभाव**—यथासमय, कानोकान **तत्पुरुष**—गृहस्वामिनी, रसोईघर
कर्मधारय—नीलकमल, चंद्रमुख, महादेव **द्विगु**—पंचवटी, अष्टाध्यायी

CHAPTER - 8

1. (क) जो शब्द लगभग एक समान अर्थ व्यक्त करते हैं, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

(ख) जो शब्द एक-दूसरे का विपरीत अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें विलोम शब्द कहते हैं।

(ग) जो शब्द देखने में एक-दूसरे के पर्याय लगते हैं, किंतु उनके अर्थ में पर्याप्त अंतर होता है, उन्हें एकार्थी शब्द कहते हैं, जबकि अनेकार्थी शब्द अनेक अर्थ प्रकट करते हैं।

2. (क) समानार्थी (ख) अनेकार्थी (ग) विलोम (घ) समरूपी

3. (क) मेहमान, आगंतुक, पाहुन (ख) धनु, कमान, चाप
(ग) राही, पंथी, मुसाफिर (घ) भारती, शारदा, वीणापाणि
(ङ) लक्ष्य, ध्येय, मकसद

4. (क) स्तुति (ख) दीर्घायु (ग) निर्जल (घ) प्राकृतिक/स्वाभाविक
(ङ) वैरागी (च) स्वार्थ (छ) बाह्य (ज) लघु

5. (क) 2 (ख) 2 (ग) 1 (घ) 2 (ङ) 2

6. (क) सिंदूर, सूर्य (ख) देवता, स्वर्ण (ग) पहिया, चक्कर
(घ) इलाज, उपचार (ङ) लाठी, सजा (च) सूर्य, पक्षी
(छ) सिक्का, मोहर (ज) मशीन, उपकरण

7. (क) अकाल्पनिक (ख) अनिवार्य (ग) अत्याचारी (घ) विदेशी
(ङ) अगणित (च) कुलीन

CHAPTER - 9

1. (क) किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं।

(ख) संज्ञा के तीन भेद हैं—
(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा, (ii) भाववाचक संज्ञा, (iii) जातिवाचक संज्ञा।

(ग) भाववाचक संज्ञा का निर्माण पाँच प्रकार से होता है।

2. (क) संज्ञा (ख) दो (ग) भाववाचक (घ) समूह या समुदाय
(ङ) भाववाचक

3. (क) √ (ख) × (ग) × (घ) √

4. **व्यक्तिवाचक**—महाभारत, चंडीगढ़, हिमालय।
जातिवाचक—नदी, देश, घर।
भाववाचक—सुंदरता, बचपन।

5. (क) 2 (ख) 2 (ग) 2 (घ) 2 (ङ) 2

6. (क) अहंकार (ख) निकटता (ग) दूरी (घ) स्वत्व (ङ) ऊपरी
(च) सजावट (छ) व्यक्तित्व (ज) वकालत (झ) लिखावट (ञ) स्वास्थ्य

CHAPTER - 10

1. (क) संज्ञा के जिस रूप से उसके पुरुष या स्त्री जाति का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं।
(ख) लिंग के दो भेद हैं—
(i) पुल्लिंग—नेता, घोड़ा, नौकर।
(ii) स्त्रीलिंग—नौकरानी, बिल्ली, नदी।

2. (क) लिंग (ख) पुल्लिंग (ग) स्त्रीलिंग (घ) प्रत्यय

3. (क) √ (ख) √ (ग) √ (घ) ×

4. **पुल्लिंग**—भारत, जेठ, आचार्य।
स्त्रीलिंग—फारसी, रोटी, यमुना, हिंदी, पानी।

5. (क) 2 (ख) 2 (ग) 2 (घ) 2 (ङ) 2

6. (क) धोबी (ख) रूपवान (ग) पंडिताइन (घ) नौकरानी (ङ) वृद्धा
(च) लुहारिन (छ) लेखन (ज) मालिन

CHAPTER - 11

1. (क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसके एक या एक से अधिक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।
(ख) वचन के दो भेद हैं—
(i) एकवचन—घोड़ा, मेज। (ii) बहुवचन—घोड़े, लड़के।

2. (क) नदियाँ (ख) ऋतुएँ (ग) लड़के (घ) तितलियाँ (ङ) पुस्तकें

3. (क) √ (ख) × (ग) √ (घ) ×

4. Do yourself.

5. (क) 2 (ख) 2 (ग) 2 (घ) 2 (ङ) 2

6. (क) बोतलें (ख) गुड़ियाँ (ग) बहुएँ (घ) चुहिया (ङ) घटना
(च) छात्रा

CHAPTER - 12

1. (क) संज्ञा अथवा सर्वनाम का क्रिया के साथ संबंध जोड़ने वाले शब्द कारक कहलाते हैं। इसके आठ भेद होते हैं।

(ख) करण कारक के माध्यम से कर्ता काम करता है, जबकि अपादान कारक में तुलना तथा अलग होने का पता चलता है।

(ग) कर्म कारक में क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, जबकि संप्रदान कारक में कर्ता देने का कार्य करता है।

2. (क) में (ख) से (ग) से (घ) के, पर (ङ) के लिए

3. (क) √ (ख) × (ग) × (घ) √

4.

कारक	**भेद**
(क) के लिए	संप्रदान कारक
(ख) को, की	संबंध कारक
(ग) से	करण कारक
(घ) पर	अधिकरण कारक
(ङ) अरे मोहित	संबोधन कारक

CHAPTER - 13

1. (क) & (ख) संज्ञा के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उसे सर्वनाम कहते हैं, जैसे—हम, यह, कोई, उसका इत्यादि।

(ग) जिन सर्वनाम शब्दों से अनिश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध होता है, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं, जबकि निश्चयवाचक निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध कराते हैं।

2. (क) सर्वनाम (ख) निश्चयवाचक (ग) संबंधवाचक (घ) प्रश्नवाचक (ङ) तीन

3. (क) उसमें क्या है ? (ख) इसका रंग नीला है।

(ग) तुझे मेरा खत मिला होगा। (घ) किन्होंने भेजा है, यह सामान।

(ङ) जिसमें संतोष है, वही धनी है।

4. (क) तुमने, क्या (ख) मैं, कुछ (ग) उसने (घ) उस (ङ) तुम्हें

5. (क) 2 (ख) 2 (ग) 2 (घ) 2 (ङ) 2

6. (क) अनिश्चयवाचक (ख) निजवाचक (ग) संबंधवाचक

(घ) निश्चयवाचक (ङ) संबंधवाचक

CHAPTER - 14

1. (क) जो शब्द संज्ञा और सर्वनाम शब्दों की विशेषता प्रकट करते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।

(ख) विशेषण के चार भेद होते हैं—

(i) गुणवाचक विशेषण (ii) संख्यावाचक विशेषण

(iii) परिमाणवाचक विशेषण (iv) सार्वनामिक विशेषण

(ग) संख्यावाचक विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध कराते हैं, जबकि परिमाणवाचक विशेषण उनकी मात्रा बताते हैं, जैसे—

मेरे पास सौ रुपये हैं। (संख्यावाचक)

आज माँ ने दो लीटर दूध लिया। (परिमाणवाचक)

(घ) जो विशेषण किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम की निश्चित संख्या का बोध करवाते हैं, उन्हें निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं, जैसे—एक दर्जन केले दे दो।

2. (क) गुणवाचक विशेषण (ख) परिमाणवाचक विशेषण

(ग) संख्यावाचक विशेषण (घ) सार्वनामिक विशेषण

3. (क) जापानी गुड़िया (ख) वीर महाराणा प्रताप (ग) चौकोर कमरा

(घ) होनहार छात्र (ङ) मीठा आम (च) परिश्रमी किसान

4. (क) आदरणीय (ख) स्वदेश (ग) प्रतिदिन (घ) सुखी (ङ) पहाड़ी

(च) बंगाली (छ) राजस्थानी (ज) धार्मिक (झ) प्रेमत्व (ञ) भारतीय

5. (क) 2 (ख) 2 (ग) 2 (घ) 2 (ङ) 2

6.

	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था		उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
(क)	महानतर	महानतम	(ख)	न्यूनतर	न्यूनतम
(ग)	अधिकतर	अधिकतम	(घ)	गुरुतर	गुरुतम
(ङ)	उच्चतर	उच्चतम	(च)	निकटतर	निकटतम

CHAPTER - 15

1. (क) जो शब्द किसी कार्य के करने, घटित होने या किसी स्थिति का बोध कराते हैं, उन्हें क्रिया कहते हैं।

कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं—

(i) अकर्मक क्रिया (ii) सकर्मक क्रिया

(ख) संरचना के आधार पर क्रिया के छः भेद होते हैं—

(i) सामान्य क्रिया (ii) प्रेरणार्थक क्रिया (iii) संयुक्त क्रिया

(iv) नामधातु क्रिया (v) कृदंत क्रिया (vi) पूर्वकालिक क्रिया

(ग) धातु के चार भेद होते हैं—

(i) सामान्य धातु (ii) व्युत्पन्न धातु (iii) नाम धातु

(iv) मिश्र धातु

2. (क) क्रिया (ख) धातु (ग) एककर्मक (घ) द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया

3. (क) अकर्मक (ख) सकर्मक (ग) अकर्मक (घ) अकर्मक (ङ) सकर्मक
(च) अकर्मक

4. (क) चिकनाना (ख) फिल्माना (ग) हथियाना (घ) सठियाना (ङ) गरमाना
(च) अपनाना (छ) मोटियाना (ज) ललचाना (झ) झुठलाना (ञ) रंगाना

5. (क) 2 (ख) 2 (ग) 2 (घ) 2 (ङ) 2

6. (क) मुस्कराना सेहत के लिए अच्छा होता है।
(ख) आइसक्रीम देखकर बच्चों का जी ललचाना स्वाभाविक है।
(ग) सुबह जल्दी उठकर पढ़ना चाहिए।
(घ) उसने अपनी बहन को आवाज से पहचान लिया।
(ङ) पाठ याद करके लिखना चाहिए।
(च) खेलना अच्छा व्यायाम है।

7.

	प्रथम प्रेरणार्थक	**द्वितीय प्रेरणार्थक**
(क)	पढ़ाना	पढ़वाना
(ख)	खेलाना	खेलवाना
(ग)	दौड़ाना	दौड़वाना
(घ)	सीखाना	सिखलाना
(ङ)	गाना	गवाना
(च)	सुलाना	सुलवाना

CHAPTER - 16

1. (क) काल के तीन भेद होते हैं—
(i) भूतकाल (ii) वर्तमान काल (iii) भविष्यत् काल
(ख) भूतकाल के छः भेद होते हैं—
(i) सामान्य भूतकाल (ii) आसन्न भूतकाल (iii) पूर्ण भूतकाल
(iv) अपूर्ण भूतकाल (v) संदिग्ध भूतकाल (vi) हेतु-हेतु भूतकाल
(ग) भविष्यत् काल के दो भेद होते हैं—
(i) सामान्य भविष्यत् (ii) संभाव्य भविष्यत्

2. (क) भूतकाल (ख) सामान्य भूतकाल (ग) भविष्यत् काल (घ) सामान्य वर्तमान

3. (क) आसन्न भूत (ख) संदिग्ध भूत (ग) संभाव्य भविष्यत्
(घ) संदिग्ध भूत (ङ) सामान्य भूत

4. **भूतकाल**—घ, ङ, छ **वर्तमान**—ग, च **भविष्यत्**—क, ख

5. (क) 2 (ख) 2 (ग) 2 (घ) 2 (ङ) 2

CHAPTER - 17

1. (क) क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि वह वाक्य में कर्ता, कर्म और भाव में किसके अनुसार प्रयोग हुआ है, उसे वाच्य कहते हैं।

(ख) वाच्य के तीन भेद होते हैं—(i) कर्तृवाच्य, (ii) कर्मवाच्य (iii) भाववाच्य।

(ग) इसमें अकर्मक और सकर्मक दोनों क्रियाओं का प्रयोग हो सकता है।

2. (क) वाच्य (ख) कर्तृवाच्य (ग) कर्मवाच्य (घ) भाववाच्य

4. **कर्तृवाच्य**—ङ, ग **कर्मवाच्य**—ख, च, घ **भाववाच्य**—क, छ

5. (क) 2 (ख) 2 (ग) 2 (घ) 2 (ङ) 2

CHAPTER - 18

1. (क) अविकारी शब्द के पाँच भेद होते हैं—(i) क्रियाविशेषण, (ii) संबंधबोधक (iii) समुच्चयबोधक (iv) विस्मयादिबोधक (v) निपात।

(ख) जो क्रियाविशेषण क्रिया होने के स्थान या दिशा का बोध कराते हैं, स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

(ग) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण क्रिया की मात्रा व परिमाण बताते हैं, जबकि परिमाणवाचक विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की।

(घ) क्रियाविशेषण के चार भेद होते हैं—

(i) कालवाचक क्रियाविशेषण (ii) स्थानवाचक क्रियाविशेषण

(iii) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण (iv) रीतिवाचक क्रियाविशेषण

2. (क) कालवाचक क्रियाविशेषण (ख) स्थानवाचक क्रियाविशेषण

(ग) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण (घ) रीतिवाचक क्रियाविशेषण

3.

	भेद
(क) चुपके-चुपके	रीतिवाचक
(ख) पीछे	स्थानवाचक
(ग) जोर जोर से	रीतिवाचक
(घ) कम	परिमाणवाचक
(ङ) तेज	रीतिवाचक

4. (क) ताकि (ख) यदि-तो (ग) या (घ) परंतु (ङ) इसलिए

(च) क्योंकि (छ) और (ज) तथा

5. (क) 2 (ख) 2 (ग) 2 (घ) 2 (ङ) 2

6. (क) घृणा (ख) स्वीकृति/हर्ष (ग) विस्मय (घ) घृणा (ङ) विस्मय

CHAPTER - 19

1. (क) मिश्रित वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य होता है और एक या अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं, जो अपने पूरे अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए प्रधान उपवाक्य पर निर्भर होते हैं, जैसे—जो पुस्तक आपने मुझे दी थी, मैंने पढ़ ली है।

(ख) प्रधान उपवाक्य किसी दूसरे उपवाक्य पर आश्रित नहीं होता है।

2. (क) गांधीजी (ख) क्या (ग) आप (घ) गंगा (ङ) पृथ्वी

3. (क) √ (ख) × (ग) × (घ) √ (ङ) √

4. **सरल**—छ, ज **संयुक्त**—ग, घ, च **मिश्रित**—क, ङ, ख

5. (क) 2 (ख) 2 (ग) 2 (घ) 2 (ङ) 2

6. (क) क्या अरुण पढ़ रहा है ?

(ख) मैं आपकी घड़ी ले रहा हूँ।

(ग) हमारा घर नारायण विहार में नहीं है।

(घ) आप यह मैच जीत गए।

(ङ) आपकी यात्रा मंगलमय हो।

(च) अंदर मत आओ।

(छ) भारत मैच जीत रहा होगा।

CHAPTER - 20

1. (क) भाषा के लिखित रूप में विशेष स्थानों पर रुकने का संकेत करने वाले चिह्न विराम चिह्न कहलाते हैं।

(ख) हिन्दी भाषा में दस प्रकार के विराम चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।

(ग) दो प्रकार के होते हैं।

2. (क) पूर्ण विराम (ख) विस्मयसूचक चिह्न (ग) विवरण चिह्न

(घ) उद्धरण चिह्न (ङ) कोष्ठक चिह्न

3. (क) ? (ख) ! (ग) , (घ) : / :— (ङ) ‘ ’ / “ ” (च) [ ] / ( )

4. (क) आपने खाना खा लिया।

(ख) सुभाषचंद्र बोस ने कहा—तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।

(ग) लिंग दो प्रकार के होते हैं—स्त्रीलिंग और पुल्लिंग।

(घ) अरे ! तुम सो जाओ।

(ङ) वह परिश्रमी तो बहुत है, परंतु सफल नहीं होता।

(च) मोहित बोला, ‘‘मैं पाँच मील से पैदल आ रहा हूँ।’’

(छ) मैंने एक ही स्वप्न देखा है; भारत का महान वैज्ञानिक बनूँ।

5. एक प्रसिद्ध कवि और नाटककार ने कहा है 'समय' को मैंने नष्ट किया, अब समय मुझे नष्ट कर रहा है। मनुष्य का जीवन अनमोल है, उसी तरह समय भी अमूल्य है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। जो व्यक्ति समय के साथ नहीं चलता; वह जीवन में पिछड़ जाता है इसलिए हमें समय का सदुपयोग करना चाहिए।

CHAPTER - 21

1. (क) क्योंकि शुद्धता ही भाषा को स्पष्ट बनाती है।

(ख) (i) पिताजी दफ़्दर नहीं हैं।

(ii) वह कविता को पढ़ता है।

(ग) (i) पेड़ में आम लगे हैं।

(ii) चित्रकार द्वारा प्रदर्शनी लगाई।

2. (क) मातृभाषा, राष्ट्रभाषा (ख) अशुद्ध, अस्पष्ट

3. (क) शादी में अनेक लोग पधारे। (ख) यह काम तुमसे नहीं होगा।

(ग) मुझसे जूस पीया गया। (घ) गली में भारी भीड़ जमा थी।

(ङ) वे खाना खाते हैं।

4. (क) √ (ख) × (ग) × (घ) √ (ङ) ×

5. (क) शीतल वर्मा विद्वान हैं। (ख) उसकी आँख में आँसू आ गए।

(ग) दादाजी घूमने जा रहे हैं। (घ) मुझसे दौड़ा नहीं जाता।

(ङ) नेताजी भाषण देते हैं।

6. (क) अनकों (ख) का (ग) को (घ) पढ़ता (ङ) आऐगा

(च) उसकी

CHAPTER - 22

1. (क) जो पद सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ व्यक्त करते हैं, वे मुहावरे कहलाते हैं।

(ख) वह कथन जो लोगों में प्रचलित होता है, लोकोक्ति कहलाता है।

(ग) (i) मुहावरे वाक्य का एक अंश होता है, जबकि लोकोक्तियाँ पूर्ण वाक्य होती हैं।

(ii) मुहावरे का अर्थ वाक्य में प्रयुक्त होने पर ही स्पष्ट होता है, जबकि लोकोक्तियाँ स्वतंत्र अर्थ स्पष्ट कर सकती हैं।

(iii) मुहावरे वाक्य में प्रयुक्त होते समय लिंग, वचन, कारक के अनुरूप बदल जाते हैं, लेकिन लोकोक्तियाँ अपने मौलिक स्वरूप में बनी रहती हैं।

2. (क) चैन की बंशी बजाना (ख) डंके की चोट पर

(ग) अपनी ढपली अपना राग (घ) आग-बबूला

(ङ) एड़ी-चोटी का जोर लगाना

3. (क) बुरी तरह पराजित करना (ख) अपमानित होना
(ग) मनमानी (घ) बुरी सलाह देना
(ङ) बारीकी निकालना

4. (क) पैसे जोड़ने के चक्कर में पड़ना।
(ख) कम ज्ञानी अधिक अहंकारी होता है।
(ग) दुखी को और दुखी करना
(घ) समस्या को जड़ से समाप्त करना।
(ङ) अहंकार होना।
(च) ज्यादा सीधापन भी किसी काम का नहीं होता।

5. (क) कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है।
(ख) कुछ भी न बचा, मगर अकड़ अब भी वही।
(ग) समाज में रहते हुए प्रभावशाली लोगों से दुश्मनी।
(घ) दोहरा लाभ होना।
(च) अच्छे व्यक्ति को संसार का प्रत्येक व्यक्ति भला लगता है।
(छ) बिना किसी खर्च के श्रेष्ठ काम होना।

CHAPTER - 23

1. (क) वाणी के माध्यम से भावों तथा विचारों की अभिव्यक्ति संवाद कहलाती है।
(ख) संवाद को दो रूपों में प्रस्तुत किया जाता है।
(ग) ध्यान देने योग्य बातें—
(i) भाषा शुद्ध, सरल, स्पष्ट तथा प्रभावशाली होनी चाहिए।
(ii) संवाद उचित क्रम और पात्र के अनुकूल लिखा होना चाहिए।
(iii) विचारों तथा मनोभावों को पूर्ण रूप से व्यक्त करना चाहिए।
(iv) एक ही विचार या भाव बार-बार नहीं लिखना चाहिए।

2. (क) संवाद लेखन (ख) पात्र (ग) वाचिक रूप, अभिनय (घ) विचारों, मनोभावों

3. (क) √ (ख) × (ग) √ (घ) × (ङ) √

4. **पिता जी और बेटे के बीच संवाद**

पिता : क्यों मोहित ! पढ़ाई कैसी चल रही है ?

बेटा : जी पिताजी ! ठीक ही चल रही है।

पिता : इस बार परीक्षा के लिए गणित की तैयारी कैसी है ?

बेटा : मुझे इसमें आपकी मदद चाहिए।

पिता : ठीक है। कल से शाम को दो घंटे मैं तुम्हें गणित व अन्य विषय पढ़ाया करूँगा।

बेटा : धन्यवाद, पिताजी।

5. **मोहिनी**—एक पुस्तक। **मोहिनी**—प्रेरणादायक कविताएँ।
मोहिनी—हाँ, हाँ, क्यों नहीं !

CHAPTER - 24

1. (क) दैनिक जीवन में घटित घटनाओं, संपर्क में आए नए-नए व्यक्तियों तथा अनुभवों आदि के संक्षिप्त विवरण का समावेश डायरी लेखन कहलाता है।

(ख) ध्यान देने योग्य बातें—

(i) आरंभ में दिन और दिनांक अवश्य लिखना चाहिए।

(ii) केवल महत्वपूर्ण घटनाओं का ही उल्लेख करें।

(iii) घटनाओं का वर्णन सरल, स्पष्ट तथा संक्षिप्त में होना चाहिए।

(iv) लेखन में सच्चाई और ईमानदारी होनी चाहिए।

CHAPTER - 25

1. (क) किसी विषय पर संक्षिप्त रूप में अपने विचार व्यक्त करना अनुच्छेद लेखन कहलाता है।

(ख) ध्यान देने योग्य बातें—

(i) अनुच्छेद लिखते समय भाषा सरल, स्पष्ट तथा व्यावहारिक होनी चाहिए।

(ii) अनुच्छेद लिखने से पूर्व विषय की संपूर्ण जानकारी होनी चाहिए।

(iii) विचार क्रमबद्ध होने चाहिए।

2. **महात्मा गांधी**

महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 में पोरबंदर के काठियावाड़ स्थान में हुआ था। इनके पिता का नाम करमचंद और माताजी का नाम पुतलीबाई था। इनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। तेरह वर्ष की आयु में इनका विवाह कस्तूरबा से हुआ था।

भारत में मैट्रिक पास करने के बाद ये इंग्लैण्ड गए। वहाँ से लौटने के बाद कांग्रेस महासभा में शामिल हुए। अहिंसा और सत्याग्रह के द्वारा अंग्रेज सरकार का विरोध करके स्वतंत्रता आंदोलन चलाया। 1920 में नमक आंदोलन, 1930 में असहयोग आंदोलन और 1942 में 'भारत छोड़ो' आंदोलन चलाया। भारत को स्वतंत्र कराने में गांधीजी का बहुत बड़ा योगदान रहा।

30 जनवरी, 1948 को गांधीजी संसार से विदा हुए। दिल्ली में उनकी समाधि है जिसे 'राजघाट' कहते हैं। महात्मा गांधी जी को 'राष्ट्रपिता' कहा जाता है।

बाल दिवस

हमारे देश में हर वर्ष 14 नवम्बर को 'बाल दिवस' मनाया जाता है। इसी दिन भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू जी का जन्मदिन भी है। नेहरू

जी को बच्चे और गुलाब दोनों बहुत प्रिय थे। बच्चों के प्रति उनके लगाव के कारण ही उनके जन्मदिन को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है।

नेहरू जी ने बच्चों को पढ़ने के लिए अच्छी, मनोरंजन एवं ज्ञानवद्धर्क उच्चकोटि की सचित्र पुस्तकें उपलब्ध करने के लिए 'चिल्ड्रेन बुक ट्रस्ट' की स्थापना की। उन्होंने राष्ट्रीय बाल उद्यान और बाल भवन की भी स्थापना की।

बाल दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य बच्चों की शिक्षा-दीक्षा, पालन-पोषण, विकास और प्रगति इत्यादि की ओर ध्यान देना है।

CHAPTER - 27

1. (क) निबंध लेखन एक कला है, जिसके द्वारा लेखक अपने विचारों को अपनी भाषा शैली में प्रकट करता है। निबंध का अर्थ है—भली-भाँति बँधा हुआ।

(ख) निबंध लिखते समय विषय तथा शब्द सीमा का ध्यान रखना चाहिए।

(ग) निबंध दो प्रकार के होते हैं—(i) व्यक्ति प्रधान (ii) विषय प्रधान।

(घ) निबंध को चार भागों में बाँटा गया है—शीर्षक, प्रस्तावना, विषय-वस्तु और उपसंहार।

हमारा राष्ट्रीय दिवस

Hint : भारत का राष्ट्रीय खेल हॉकी है। हॉकी ऐसा खेल होता है जिसमें दो टीमें एक-दूसरे के विरुद्ध खेलती हैं। हॉकी स्टिक की मदद से विरोधी के खेमे में गेंद गोल में डालकर गोल करने का प्रयास करती है। फील्ड हॉकी, आइस हॉकी, रोलर हॉकी, स्लेज हॉकी और स्ट्रीट हॉकी वर्तमान में हॉकी के प्रकार हैं।

भारत में हॉकी का खेल बहुत पुराना एवं प्रिय है। विषय के ओलंपिक खेलों में हॉकी का विशेष स्थान रहा है। 1928 से 1956 तक का समय भारतीय हॉकी के लिहाज से स्वर्णिम रहा है। इस दौरान भारत में हॉकी स्पर्धा में लगातार छः स्वर्ण पदक हासिल किए।

Rest is an per the example given.

CHAPTER - 28

1. कहानी

एक बार एक जंगल में एक शिकारी ने कबूतरों को पकड़ने के लिए जाल बिछाया। कबूतर दाना/भोजन तलाशते हुए जब उस ओर से गुजरे तो उन्होंने देखा कि एक जगह बहुत से दाने बिखरे पड़े थे। वे दाना चुगने के लिए नीचे आए और दाना खाने लगे। शिकारी दूर खड़ा सब देख रहा था। कबूतरों को जब एहसास हुआ कि वे जाल में फँस चुके हैं, तो उन्होंने बिना समय गँवाए एक साथ उड़ना शुरू किया। उड़ते-उड़ते वे जंगल की दूसरी ओर जा पहुँचे। वहाँ उनके दोस्त चूहे रहते

थे। कबूतरों ने चूहों को जाल काटने के लिए कहा। चूहे ने जाल तुरंत काटकर कबूतरों को आजाद कर दिया। सच ही है एकता में बड़ा बल है।

2. कहानी : करत-करत अभ्यास के जड़मत होत सुजान

एक बार की बात है। एक गाँव में वरदाज नामक बालक रहता था। उसके मित्र उसे मंदबुद्धि कहकर चिढ़ाते थे, क्योंकि वह अपना पाठ याद नहीं कर पाता था। एक दिन अध्यापक जी ने भी उसे डाँटकर पाठशाला से बाहर कर दिया। उसे लगने लगा कि शायद सभी सच ही कहते हैं, मैं मंदबुद्धि हूँ। उदास हो वह गाँव के कुएँ के पास जा बैठा। कुछ देर बाद उसे प्यास लगी और वह कुएँ से पानी निकालने के लिए उठा। अचानक उसकी नजर कुएँ के पत्थर पर पड़ी। पत्थर पर रस्सी का निशान था। यह दृश्य मानो उसके दिमाग पर घर कर गया। उसने सोचा कि बार-बार रस्सी घिसने से यदि पत्थर पर निशान बन सकता है तो बार-बार पढ़ने से उसे भी पाठ याद हो सकता है। उसमें विश्वास का अंकुर फूटा और उसने नित्य अभ्यास का संकल्प लिया। अब वह नित्य अभ्यास से अपना पाठ याद करता। उसके ऐसा करने से व कक्षा में पाठ याद करके सुनाने पर उसके गुरुजी बहुत खुश हुए। आगे चलकर यही बालक बहुत बड़ा विद्वान बना।

CHAPTER - 29

1. (क) पुष्प की सार्थकता सुगंधित होने में है।

(ख) मानव जीवन प्रेम सहित अन्य गुणों से परिपूर्ण होना चाहिए।

(ग) दोनों का सुगंधित होना आवश्यक है।

(घ) 'प्रेम सुगंध'।

2. (क) निंदा करना दोष-दृष्टि बढ़ाना है।

(ख) अपने दोषों को दूर करके व्यक्ति दोष रहित हो सकता है।

(ग) व्यक्ति स्वयं किसी कार्य में असमर्थ होने पर, ईर्ष्या द्वेष से प्रेरित होकर निंदा करता है।

(घ) 'निंदा-रस'।

●●